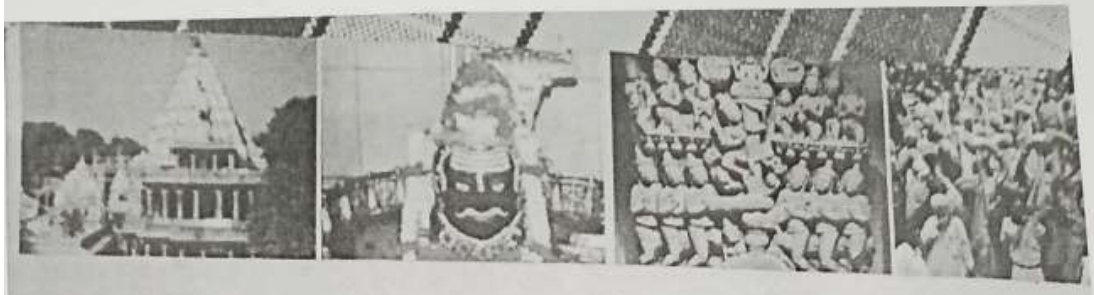

महाकाल और सिंहस्थ
Mahakal and Simhastha

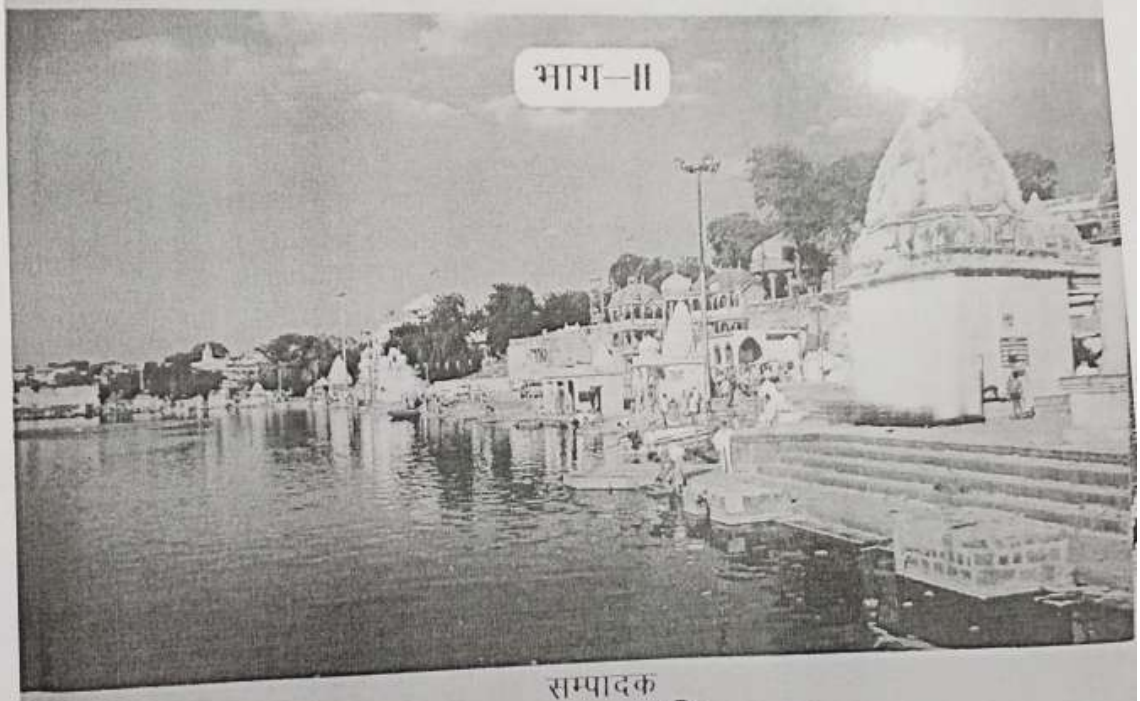

सम्पादक

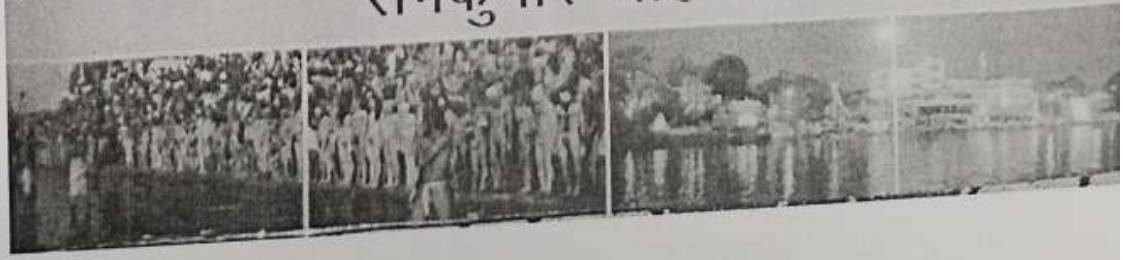

रामकुमार अहिरवार

90

क्षिप्रा नदी का सांस्कृतिक माहात्म्य

डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव*

किसी भी क्षेत्र की सांस्कृतिक चेतना के निरुपण का जीवन्त प्रमाण वहाँ की नदियाँ होती हैं, जिनके सुरम्य तट पर मानव, सभ्यता का सृजन करता हुआ अतीत एवं वर्तमान को निरुपित करता है। नदियाँ मात्र जीवनदायिनी ही नही होती अपितु किसी भी क्षेत्र की राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक उपलब्धियों का भी प्रतिबिम्बन करती है। इसी प्रकार की एक पावन एवं पवित्र नदी क्षिप्रा आदि काल से ही महाकाल की नगरी उज्जयिनी में बहती हुयी जनमानस को तृप्त एवं मोक्ष प्रदान कर रही है।

क्षिप्रा भारत की पवित्रतम नदियों में एक है। इसे सिप्रा, क्षिप्रा एवं अवन्ती आदि नामों से भी जाना जाता है। भौगोलिक दृष्टि से इस नदी का उद्गम विन्ध्य पर्वतमाला की कोकरी बारदी पहाड़ी है, जो मध्यप्रदेश के इन्दौर जिले के उजेनी नामक गाँव (22° 31′ उत्तर एवं 76° पूर्व) में स्थित है। यहाँ से निकल कर यह नदी सामान्यतः उत्तर पश्चिम दिशा की ओर मालवा के पठारों में प्रवाहमान होते हुये ग्वालियर में कालूखेर गाँव (23° 53′ उत्तर एवं 75° 31′ पूर्व) के समीप चम्बल नदी में समाहित हो जाती है।[**] क्षिप्रा की सहायक नदियों में खान, गंभीर एवं सिवन नदी प्रमुख है। सिवन नदी के बायें तट पर प्राचीन दशपुर नगर स्थित था।

इस नदी का नाम क्षिप्रा, क्षिप्र सरोवर से निकलने के कारण पडा है। एक अन्य मान्यता के अनुसार प्राचीन काल में यह नदी अपने तेज प्रवाह के कारण क्षिप्रा के नाम से प्रचलित हुयी। इसके अन्य नामों का उल्लेख भी मिलता है। इस पुण्य–सलिला क्षिप्रा को वैकुण्ठ में क्षिप्रा, स्वर्ग में ज्वरघ्नी, यमद्वार में पापघ्नी तथा पाताल में अमृतसंभवा कहा गया है।

पौराणिक ग्रन्थों में भी क्षिप्रा के उद्भव के अनेक विवरण प्राप्त होते हैं। इस नदी को भगवान विष्णु के रक्त से उत्पन्न बतलाया गया है। कथा के अनुसार महाकाल ब्रह्मकपाल लेकर भगवान विष्णु से भिक्षा मांगने पहुँचे। तब भगवान विष्णु ने उन्हें अंगुली दिखाते हुये भिक्षा प्रदान की। इस अशिष्टता से महाकाल रुष्ट हो गये

* सहायक प्राध्यापक, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व, विभाग, डॉ0 हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर म0प्र0

** कुछ स्थलों पर क्षिप्रा नदी का उद्गम स्थल मध्यप्रदेश में इन्दौर के समीप महू छावनी से लगभग 17 किमी0 दूर जानापाव की पहाड़ियों से माना गया है।